इकाई 2 उद्योग और क्षेत्रगत सहलग्नता (अनुबंध)

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 औद्योगिकरण और अर्थव्यवस्था का संरचनात्मक परिवर्तन
2.2.1 सहलग्नता (अनुबंध) की प्रकृति
2.3 कृषि और उद्योग में सहलग्नता (अनुबंध)
2.3.1 औद्योगिक विकास में कृषि का योगदान
2.3.2 कृषि के विकास में उद्योग का योगदान
2.4 उद्योग और व्यापार में सहलग्नता (अनुबंध)
2.4.1 औद्योगिकरण और विदेश व्यापार
2.4.2 विदेश व्यापार के विकास में उद्योग का योगदान
2.5 औद्योगिकरण, घरेलू (आंतरिक) व्यापार और परिवहन
2.5.1 औद्योगिकरण और घरेलू व्यापार
2.5.2 औद्योगिकरण और परिवहन
2.6 औद्योगिकरण और आधारभूत संरचना
2.7 औद्योगिकरण की अन्य सहलग्नताएँ (अनुबंध)
2.8 सारांश
2.9 शब्दावली
2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ
2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

2.0 उद्देश्य

आर्थिक विकास के स्रोत के रूप में औद्योगिकरण को अलग से न तो देखा जा सकता है और न ही देखे जाने की आवश्यकता है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में अर्थव्यवस्था के औद्योगिक क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों के बीच मजबूत पश्चानुबंध (बैकवर्ड लिंकेज) और अग्रानुबंध (फॉरवर्ड लिंकेज) (सहलग्नता) स्थापित हो जाते हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों की प्रकृति और उसका महत्त्व समझ सकेंगे;

- कृषि क्षेत्र और औद्योगिक क्षेत्र के बीच सहलग्न्ता (अनुबंध) की प्रकृति को समझ सकेंगे;
- यह समझ सकेंगे कि व्यापार और उद्योग कैसे एक दूसरे के पूरक और परस्पर निर्भर हैं; तथा
- अर्थव्यवस्था के औद्योगिक क्षेत्र और आधारभूत संरचना के बीच सहलग्नता (लिंकेज) के बारे में बता सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

प्रथम इकाई में हमने औद्योगिकरण की परिभाषा एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में की जिसमें सकल घरेलू उत्पाद और श्रम बल में उद्योग क्षेत्र का हिस्सा तेजी से बढ़ता है। अर्थव्यवस्था का गुरुत्व केन्द्र कृषि से हटकर उद्योग हो जाता है। तथापि, औद्योगिक क्षेत्र जो अग्रणी हो जाता है, को एकदम पृथक् रूप से देखे जाने की जरूरत नहीं है। सार्थक और प्रभावी

औद्योगिक विकास का पोषण अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में विकास पर निर्भर करता है, साथ ही यह अन्य क्षेत्रों में विकास को भी बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, औद्योगिकरण का सतत् कार्यक्रम तब तक लाभप्रद नहीं हो सकता है, जब तक कि इसे कृषि क्षेत्र का मजबूत सहारा न मिले; इसी प्रकार औद्योगिक विकास से उत्पन्न अवसरों तथा परिस्थितियों के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादकता में सुधार होता है जो तीव्र औद्योगिकरण को और बढ़ावा देता है। इसी प्रकार की सहलग्नता अर्थव्यवस्था के औद्योगिक क्षेत्र और सेवा क्षेत्र के विकास के बीच भी देखी जा सकती है। उद्योगों के तीव्र विकास के लिए आधारभूत संरचना की आवश्यकता होती है और पुन: तीव्र औद्योगिकरण से आधारभूत संरचना को बढ़ावा मिलता है। हमें औद्योगिक क्षेत्र और अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों के बीच. सहलग्नता का विस्तार पूर्वक पता लगाना चाहिए।

2.2 औद्योगिकरण और अर्थव्यवस्था का संरचनात्मक परिवर्तन

औद्योगिकरण की प्रक्रिया जैसे-जैसे आगे बढ़ती है, अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन होता जाता है। संरचनात्मक परिवर्तन के विश्लेषण के उद्देश्य से हम एक अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों अर्थात् (एक) प्राथमिक क्षेत्र (दो) द्वितीयक क्षेत्र और (तीन) सेवा क्षेत्र में बाँटते हैं

- अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र की परिभाषा में कृषि, पशुपालन, सभी प्रकार की खेती, शिकार (आखेट), मत्स्यन और वानिकी को सम्मिलित करते हैं।
- द्वितीयक क्षेत्र में विनिर्माण, निर्माण, खनन और विद्युत का उत्पादन शामिल है। कतिपय देशों में खनन और विद्युत उत्पादन को इस आधार पर प्राथमिक उत्पादन में सम्मिलित किया गया है कि इनमें प्राकृतिक संसाधनों का दोहन होता है। यह सत्य है, किंतु इन उद्योगों का प्रचालन कई तरह से विनिर्माण उद्योग के सदृश है और इनकी कृषि से समानता अत्यन्त कम है।
- सेवा क्षेत्र में, व्यापार और वाणिज्य, परिवहन, लोक प्रशासन, घरेलू, व्यक्तिगत और व्यावसायिक सेवाएँ सम्मिलित हैं।

औद्योगिकरण के साथ अर्थव्यवस्था में विभिन्न क्षेत्रों के सापेक्षिक महत्त्व में परिवर्तन होता है। इस संबंध में साइमन कजनेत्स ने 15 देशों के अपने दीर्घकालीन नमूनों (निदर्शों) के अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्षों को प्रस्तुत किया था :

- सभी 15 देशों में निरपवाद रूप से श्रम बल और राष्ट्रीय उत्पादन में कृषि क्षेत्र के हिस्सों में गिरावट आई है। अधिकांश देशों में श्रम बल और राष्ट्रीय उत्पादन में विनिर्माण क्षेत्र का हिस्सा बढ़ा। तथापि, श्रम बल में विनिर्माण क्षेत्र का हिस्सा उतना नहीं बढ़ा, जितने की अपेक्षा की गई थी। अंतत:, सभी देशों में श्रम बल में सेवा क्षेत्र के हिस्सों में वृद्धि हुई किंतु राष्ट्रीय उत्पादन में इसके हिस्से की तद्नुरूप वृद्धि नहीं दिखाई पड़ती है।
- गैर कृषि क्षेत्रों में प्रति-मजदूर-उत्पाद में वृद्धि हुई है किंतु कृषि क्षेत्र में प्रति-मजदूर-उत्पाद में वृद्धि उससे भी ज़्यादा रही है। अध्ययन किए गए अधिकांश देशों में अर्थव्यवस्था के गैर कृषि क्षेत्र एवं विनिर्माण क्षेत्र में प्रति-मजदूर-उत्पाद में वृद्धि सेवा क्षेत्र में प्रति-मजदूर-उत्पाद में वृद्धि से कहीं ज़्यादा रही। कृषि क्षेत्र में प्रति-मजदूर-उत्पाद में वृद्धि, विनिर्माण अथवा सेवा दोनों क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक धीमी थी।

इस प्रकार, कजनेत्स अनुभव सिद्ध साक्ष्य के आधार पर यह व्याख्या करते हैं, कि आर्थिक विकास किस प्रकार अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के सापेक्षिक महत्त्व में परिवर्तन से संबद्ध है। इन निष्कर्षों का महत्त्व यह है कि ऐतिहासिक रूप से आर्थिक विकास की प्रक्रिया के दौरान स्पष्ट रूप से कृषि क्षेत्र से दूरी बढ़ती है तथा साथ ही प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि होती है, और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि औद्योगिकरण, शहरीकरण और उससे जुड़ी प्रक्रियाओं का परिणाम माना जाता है।

2.2.1 सहलग्नता (अनुबंध) की प्रकृति

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच विद्यमान सहलग्नता की पहचान निम्न रूप में की जा सकती है :

- पश्चानुबंध (बैकवर्ड लिंकेज) और
- अग्रानुबंध (फॉरवर्ड लिंकेज)

पश्चानुबंध का अभिप्राय, उद्योग अथवा फर्म और इसके आदानों के आपूर्तिकर्ताओं के बीच संबंध से है। उद्योग के उत्पादन में परिवर्तन का प्रभाव इसके आदानों के आपूर्तिकर्ताओं पर पड़ेगा तथा आदानों की माँग में परिवर्तन आएगा।

अग्रानुबंध का अभिप्राय, उद्योग अथवा फर्म और अन्य उद्योगों अथवा फर्मों जो इसके उत्पादन को आदान की भाँति उपयोग करते हैं, के बीच संबंध से है। उत्पादन अथवा मूल्य में परिवर्तन इसके उत्पादों के प्रयोगकर्ताओं पर टाल दिया जाता है।

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्र-कृषि, उद्योग व्यापार, आधारभूत संरचना-पश्चानुबंध और अग्रानुबंध के माध्यम से एक दूसरे से नजदीकी रूप से जुड़े हुए हैं। हम अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच विद्यमान इन सहलग्नताओं की प्रकृति की विस्तारपूर्वक जाँच करेंगे।

2.3 कृषि और उद्योग के बीच सहलग्नता

कृषि और औद्योगिक विकास दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, और स्वत: ही अन्योन्याश्रित हैं। हम इनकी पूरकता और सहलग्नता पर दो भागों में चर्चा कर सकते हैं।

- औद्योगिक विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान।
- कृषि क्षेत्र के विकास में उद्योगों का योगदान।

2.3.1 औद्योगिक विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान

साइमन कजनेत्स ने पाया कि समग्र आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र चार प्रकार से योगदान कर सकता है :

i) उत्पाद योगदान; अर्थात् खाद्य और कच्चा माल उपलब्ध कराना;

ii) बाज़ार योगदान; अर्थात् गैर कृषि क्षेत्र में उत्पादक मालों और उपभोक्ता सामग्रियों के लिए बाज़ार उपलब्ध कराना;

iii) उपादान योगदान; अर्थात् गैर कृषि क्षेत्र को श्रम और पूँजी उपलब्ध कराना;

iv) विदेशी-मुद्रा योगदान; अर्थात् विविधिकृत आयातों के लिए अपेक्षित विदेशी मुद्रा अर्जित करना।

हम आगे के भागों में औद्योगिक विकास में कृषि क्षेत्र के योगदान को स्पष्ट करेंगे।

क) खाद्य आपूर्ति और औद्योगिकरण

औद्योगिकरण की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसके द्वारा कृषि उत्पादों के लिए माँग में भारी वृद्धि होती है और खाद्य आपूर्ति में वृद्धि न हो पाने की अवस्था में विकास की प्रक्रिया अवरुद्ध हो सकती है।

माँग में स्वत: परिवर्तनों से अलग, माँग में वृद्धि की वार्षिक दर $D = n + eg$ है जहाँ n और g

क्रमश: जनसंख्या वृद्धि दर तथा प्रति व्यक्ति आय हैं और e कृषि उत्पादों के लिए आय माँग लोच है।

विकासशील देशों में खाद्य आय माँग लोच अधिक आय वाले राष्ट्रों की तुलना में काफी ज़्यादा होता है। इसलिए, प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि के दिए गए दर का, कृषि उत्पादों की माँग पर, आर्थिक रूप से विकसित देशों की तुलना में काफी ज़्यादा प्रभाव पड़ता है।

तीव्र औद्योगिकरण से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है। यदि माँग में वृद्धि के अनुरूप खाद्य आपूर्ति नहीं बढ़ती है तो खाद्य के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होगी जिससे मजदूरी दर में वृद्धि करने के लिए दबाव बढ़ेगा और इसका दुष्प्रभाव औद्योगिक लाभ, निवेश और वृद्धि पर पड़ेगा।

यह संभव है, कि आंतरिक माँग-आपूर्ति संतुलन को बनाए रखने के लिए आयात द्वारा खाद्यान्नों की घरेलू आपूर्ति का अंतर पूरा किया जाए। किंतु इस तरह के कार्य से एक अन्य असंतुलन पैदा होता है जिससे इस बार अर्थव्यवस्था के बाह्य क्षेत्र में असंतुलन पैदा होता है जिसका घरेलू क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। खाद्यान्न आयात का देश के भुगतान-संतुलन पर भारी दबाव पड़ सकता है। इसका अर्थ यह भी हुआ कि एक देश को पूँजीगत माल जैसे मशीनों, तकनीकी ज्ञान इत्यादि का अधिक जरूरी आयात छोड़ने पर बाध्य होना पड़े। यदि ऐसा होता है तो इससे विकास की संभावना और क्षीण हो जाएगी।

ख) उद्योग के लिए आदान

उद्योग के लिए आवश्यक दो महत्त्वपूर्ण आदान सिर्फ कृषि क्षेत्र से प्राप्त किए जा सकते हैं। ये हैं : (i) कच्चा माल और (ii) श्रम।

सभी प्रौद्योगिकीय और वैज्ञानिक परिवर्तन के बावजूद भी उद्योगों के लिए यह संभव नहीं है कि वे कृषिगत कच्चे मालों जैसे कपास, जूट, गन्ना, चर्म इत्यादि की आपूर्ति के बिना काम चला सकें। यह निश्चितता के साथ कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि किसी विशेष वर्ष के दौरान कृषि फसलों का बर्बाद हो जाना उद्योग के लिए भी विनाशकारी होता है क्योंकि परिणामस्वरूप कच्चे मालों की आपूर्ति ठप पड़ जाती है।

इसी प्रकार, विकासशील अर्थव्यवस्था के कृषि क्षेत्र में जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा नियोजित होता है। औद्योगिकरण की प्रक्रिया जैसे-जैसे आगे बढ़ती है, श्रम की आवश्यकता भी बढ़ती जाती है तथा इस आवश्यकता को केवल कृषि क्षेत्र से श्रम निकाल कर ही पूरा किया जा सकता है। यदि मजदूरों को कृषि क्षेत्र से निकाल कर उन्हें औद्योगिक क्षेत्र में लगाना है तो कृषि उत्पादकता बढ़ाना अत्यधिक जरूरी है ताकि उन्हें वहाँ से निकालना संभव हो सके। ज्यों-ज्यों अधिक से अधिक मजदूर कृषि क्षेत्र से बाहर निकलते जाते हैं; शेष मजदूरों को अपनी उत्पादकता जरूर बढ़ानी चाहिए, ताकि आवश्यक खाद्यान्न आपूर्ति को बनाए रखा जा सके।

ग) पूँजी विनिर्माण के स्रोत

एक विकासशील देश में राष्ट्रीय आय का मुख्य अंश कृषि क्षेत्र से उत्पन्न होता है। यदि कृषि क्षेत्र सुविकसित है, तो यह औद्योगिक क्षेत्र में पूँजी विनिर्माण में शुद्ध योगदान कर सकता है। इस दृष्टिकोण के समर्थन में तीन तर्क दिए जाते हैं :

i) उद्योग की तुलना में कृषि में पूँजी-उत्पादन अनुपात, सापेक्षिक रूप से कम है इसलिए कृषि क्षेत्र में केवल अल्प पूँजी निवेश करके उत्पादकता बढ़ाने की गुंजाइश अधिक है।

ii) क्षेत्रगत व्यापार की स्थिति (टर्म्स ऑफ ट्रेड) की कृषि के पक्ष में और सुधारने की जोरदार प्रवृत्ति होती है जिसके फलस्वरूप गैर-कृषि आय की तुलना में कृषि आय में वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक होती है।

iii) खेतिहर जनसंख्या का परम्परागत रूप से उपभोग स्तर सामान्यत: कम होता है, और इसमें कृषि विकास के फलस्वरूप आय में होने वाली वृद्धि के अनुरूप बढ़ोत्तरी होने की संभावना नहीं होती है।

घ) विदेशी मुद्रा का स्रोत

अपने शैशवावस्था में उद्योग न सिर्फ नगण्य विदेशी मुद्रा अर्जित करता है वरन् इसे इसकी आवश्यकता भी अधिक होती है। उद्योग को स्थानीय स्तर पर उत्पादित नहीं हो रहे मशीनों, प्रौद्योगिकी और अन्य आदानों की भी आवश्यकता होती है और जिसके लिए विदेशी मुद्रा की जरूरत पड़ती है। यदि कृषि प्राथमिक उत्पादों के निर्यात बिक्री से विदेशी मुद्रा नहीं अर्जित करता है, तो देश को फिर भुगतान संतुलन की समस्या का सामना करना पड़ेगा जिससे औद्योगिकरण का कार्यक्रम बाधित होगा।

ङ) औद्योगिक उत्पादों के लिए बाज़ार

उद्योग कुशलतापूर्वक कार्य कर सके इसलिए सुदृढ़ और सुविकसित बाज़ार की आवश्यकता होती है। ऐसे अनेक उद्योग हैं जिनके लिए समकालीन प्रौद्योगिकी और बड़े पैमाने की मितव्ययिता का लाभ उठाने के लिए न्यूनतम व्यवहार्य आकार का होना आवश्यक है।

विकासशील देशों में औद्योगिक मालों की थोक माँग कृषि पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर जनसंख्या से आता है। यदि कृषि क्षेत्र में लोगों की आय उनकी जीवन निर्वाह आवश्यकताओं से अधिक नहीं होती है, तो वे उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप बाज़ार उपलब्ध नहीं करा सकेंगी। जो कि इसकी स्थापना और सतत् विकास के लिए जरूरी है। औद्योगिक उपभोक्ता सामग्रियों की माँग को कृषि क्षेत्र दो प्रकार से प्रभावित करता है :

i) बढ़ा हुआ कृषि उत्पादन और बढ़ रही आय औद्योगिक वस्तुओं के माँग में वृद्धि को उत्प्रेरित करती है।

ii) उद्योग पर कृषि का प्रभाव भी 'व्यापार की स्थिति' (Terms of Trade) के माध्यम से कार्य करता है। कृषि के पक्ष में व्यापार की स्थिति में सुधार से शहरी क्षेत्रों में गैर खाद्य मदों के लिए माँग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, ग्रामीण क्षेत्र में व्यापार की स्थिति का प्रभाव आवश्यक रूप से एक दिशा में नहीं होगा। कम आय समूहों के मामले में, शहरी क्षेत्र की भाँति ही प्रभाव होगा, अधिक आय समूहों के मामले में माँग पर नकारात्मक प्रभाव को कृषि वस्तुओं के मूल्यों में बढ़ोत्तरी से आय में हुई वृद्धि को निष्प्रभावी किया जा सकता है। व्यापार की स्थिति में वृद्धि का समग्र प्रभाव जनसंख्या के सभी वर्गों के लिए संयुक्त प्रभाव पर निर्भर करेगा।

इस प्रकार, कृषि क्षेत्र में निष्पादन, उत्पादन परिणाम और 'व्यापार की स्थिति' प्रभावों दोनों के माध्यम से औद्योगिक उपभोक्ता वस्तुओं के माँग को प्रभावित कर सकता है।

संक्षेप में, औद्योगिकरण के कार्यक्रम में बढ़ती हुई कृषि उत्पादकता का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है और यह एक महत्त्वपूर्ण शर्त है जिसे किसी अर्थव्यवस्था के आत्मधारित विकास की प्रक्रिया के लिए तैयार होने से पूर्व पूरा किया जाना अनिवार्य है।

1) आप अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक रूपान्तर से क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) अर्थव्यवस्था के विकास के साथ इसकी संरचना में किस प्रकार के परिवर्तन होते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) अग्रानुबंध और पश्चांनुबंध के बीच भेद कीजिए?

.....

.....

.....

.....

.....

4) विकासशील अर्थव्यवस्था में तीव्र औद्योगिकरण की प्रक्रिया में कृषि क्षेत्र के चार योगदानों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.3.2 कृषि के विकास में उद्योग का योगदान

उद्योग कई प्रकार से कृषि के विकास में योगदान करता है तथा इसकी प्रगति को संभव बनाता है:

उर्वरक, कीटनाशक और यहाँ तक कि पानी सहित अधिकांश आधुनिक आदान उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए जाते हैं।

उद्योग खेतों के लिए आवश्यक मशीन उपलब्ध कराते हैं।

कृषि-अभियांत्रिकी उद्योग का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

हमारे देश में हरित क्रांति के लिए उत्तरदायी अधिकांश अनुसंधान उस वातावरण में संभव हुए जिसे औद्योगिक संस्कृति कहा जाता है।

उद्योग कृषि की प्रगति के लिए अपेक्षित आधारभूत संरचना के निर्माण में सहायता करता है। इसमें परिवहन और संचार, व्यापार और वाणिज्य, बैंकिंग और विपणन तंत्र इत्यादि सम्मिलित हैं।

उद्योग ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ती हुई जनसंख्या और आय के परिणामस्वरूप उपभोक्ता मालों की बढ़ती हुई माँग को पूरा करता है।

संक्षेप में, एक विकासशील देश के लिए कृषि और उद्योग दोनों के एकीकृत विकास को बढ़ावा देना एक विवेकसम्मत और युक्तिसंगत रणनीति है, न सिर्फ इसलिए कि आर्थिक विकास की दिशा में वे परस्पर निर्भर हैं; अपितु इसलिए भी कि वे तकनीकी दृष्टि से भी परस्पर संबंधित हैं, चूँकि दोनों क्षेत्र अपनी-अपनी उत्पादन प्रक्रिया में दूसरे के उत्पादन का किसी न किसी प्रकार से उपयोग अवश्य करते है। कृषि और उद्योग के एकीकृत विकास की रणनीति तैयार करने में कृषि आधारित उद्योगों को महत्त्वपूर्ण भूमिका सौंपी जानी चाहिए, क्योंकि वह दोनों के बीच में अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण कड़ी है। विकासशील देश अत्याधुनिक औद्योगिक काम्प्लेक्स को बढ़ावा देने के प्रयास में कृषि आधारित उद्योगों की, उस महत्त्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज कर देते हैं। जो वह, कृषि और उद्योग के एकीकृत विकास को बढ़ावा देने और जड़ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गतिमान औद्योगिक अर्थव्यवस्था में बदलने में निभा सकता है।

2.4 उद्योग और व्यापार में सहलग्नता (लिंकेज)

उद्योग और व्यापार के बीच पश्चानुबंध और अग्रानुबंध अर्थव्यवस्था के किसी अन्य दो क्षेत्रों के बीच सहलग्नता की तुलना में अधिक पारदर्शी और गहरा है। यह कहना सिर्फ पुनरोक्ति होगी कि :

- तीव्र औद्योगिकरण के फलस्वरूप व्यापार का तेज़ी से प्रसार होता है, और
- व्यापार का तेज प्रसार, तीव्र औद्योगिकरण की अनिवार्य शर्त है।

तथापि, इससे पहले कि हम इस सहलग्नता की प्रकृति की जाँच-पड़ताल करें हम यह बताना चाहेंगे कि व्यापार घरेलू व्यापार अथवा विदेशी व्यापार दोनों में से एक हो सकता है। घरेलू व्यापार में माल और सेवाओं का प्रवाह देश की भौतिक सीमाओं के अंदर होता है, विदेश व्यापार में माल और सेवाओं का प्रवाह सीमा के आर-पार होता है। इस भाग में हम औद्योगिकरण और विदेश व्यापार के बीच सहलग्नता का अपना विश्लेषण जारी रखेंगे। हम घरेलू व्यापार का विश्लेषण आगे के भाग में करेंगे।

2.4.1 औद्योगिकरण और विदेश व्यापार

पूर्व में विदेश व्यापार ने "विकास के इंजिन" की भाँति कार्य किया है (उन्नीसवीं शताब्दी में ग्रेट ब्रिटेन और बीसवीं शताब्दी में जापान), और हाल के समय में भी एशिया की नई औद्योगिकरण करने वाली अर्थव्यवस्थाएं जैसे, हांगकांग (इस समय चीन का विशेष प्रशासित क्षेत्र), सिंगापुर, ताइवान, मलेशिया, थाइलैंड और दक्षिण कोरिया द्वारा अपनाई गई "बहिर्गामी-अभिविन्यास विकास रणनीति" (आउटवार्ड ओरिएण्टेड ग्रोथ स्ट्रेटेजी) ने उन्हें छोटे संसाधनविहीन विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की बाधाओं को पार करने में सक्षम बनाया है।

विदेश व्यापार कई प्रकार से तीव्र औद्योगिकरण में योगदान करता है :

सबसे पहले विदेश व्यापार तीव्र औद्योगिकरण के लिए भौतिक साधन (पूँजीगत माल, मशीन और

कच्चा माल तथा अर्द्ध निर्मित वस्तुएँ) सुलभ कराते हैं।

दूसरा, संभवत: भौतिक सामग्रियों के आयात से भी ज़्यादा महत्त्वपूर्ण तकनीकी ज्ञान, दक्षता, प्रबन्धकीय मेधा और उद्यमिता का आयात है। यह, निश्चय ही विकासशील देशों के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। किंतु विकसित देशों को भी परस्पर व्यापार से अत्यधिक लाभ होता है और कम विकसित औद्योगिक देशों को भी अधिक विकसित देशों से बेहतर तकनीकी और प्रबन्धकीय ज्ञान की प्राप्ति से लाभ हो सकता है।

विकास और औद्योगिकरण की प्रक्रिया में विलम्ब से सम्मिलित होने वाले देशों को इस बात का सदैव फायदा रहता है कि वे औद्योगिकरण के क्षेत्र में अग्रणी देशों के अनुभवों, सफलताओं-असफलताओं और भूलों से सीख ले सकते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में महाद्वीपीय यूरोपीय देशों और अमरीका को ग्रेट ब्रिटेन में हुई औद्योगिक क्रांति की प्रौद्योगिकीय आविष्कारों तथा उपलब्धियों से अत्यधिक लाभ हुआ था, बाद में जापानी नवीन आविष्कारों, ज्ञान-विज्ञान आदि को सीखने में अत्यन्त योग्य सिद्ध हुए।

आज विकासशील देशों के सम्मुख प्रौद्योगिकीय ज्ञान का विशाल और सतत् वर्द्धमान भण्डार विद्यमान है जिसमें से वह प्रौद्योगिकीय ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यह सच है कि विकसित देशों की परिस्थितियों के अनुकूल विकसित पद्धतियों को सीधे अपना लेना बहुधा संभव नहीं है। किंतु अनुकूलन पहली-पहली बार आविष्कार करने से निश्चय ही कहीं अधिक आसान है।

व्यापार प्रौद्योगिकीय ज्ञान के पारगमन का सबसे महत्त्वपूर्ण वाहक है। लेकिन ऐसा नहीं कि व्यापार ही इस पारगमन का एकमात्र स्रोत है। वस्तुत: सौ वर्ष पूर्व व्यापार की यह भूमिका जितनी महत्त्वपूर्ण थी, संभवत: आज उतनी नहीं है क्योंकि विचार, दक्षता, तकनीकी जानकारी उन्नीसवीं शताब्दी की अपेक्षा अधिक आसानी तथा तीव्रता से और कम खर्च पर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँच जाते हैं। आज बाज़ार जिसमें अभियांत्रिकी और प्रबन्धकीय विशेषज्ञों को वेतन पर रखा जा सकता है पहले की अपेक्षा अधिक संगठित है। इस क्षेत्र में और महत्त्वपूर्ण पूँजीगत उपस्करों के क्षेत्र में आज कहीं अधिक प्रतिस्पर्धा है। उन्नीसवीं शताब्दी में सिर्फ ग्रेट-ब्रिटेन ही एक ऐसा केन्द्र था जिससे औद्योगिक उपस्कर और तकनीकी जानकारी हासिल की जा सकती थी, और इन दोनों के निर्यात पर अनेक प्रतिबन्ध भी थे। आज यदि अधिक नहीं तो कम से कम ऐसे एक दर्जन केन्द्र हैं और यह सभी अपनी मशीनें और अभियांत्रिकी परामर्श तथा तकनीकी जानकारी बेचने को तत्पर हैं।

हालाँकि, व्यापार अभी भी पारगमन का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है। जे एस मिल ने सैंकड़ों वर्ष पहले जो कहा था वह आज भी बहुत हद तक सच है : "मानव के अल्प विकास की इस स्थिति में मानव को उनसे विजातीय भिन्न प्रकार से सोचने तथा अलग प्रकार से कार्य करने वाले व्यक्तियों के संपर्क में रखने के महत्त्व का अधिमूल्यांकन करना संभव नहीं।" इस तरह के संपर्क सदैव और विशेषकर वर्तमान युग में प्रगति का प्रमुख स्रोत रहा है।

तीसरे, व्यापार पूँजी के प्रवाह के साधन के रूप में भी कार्य करता है। यह सच है कि एक विकासशील देश विदेश से जो पूँजी प्राप्त कर सकता है वह पहले विकसित देश की ऋण देने की क्षमता और इच्छा पर निर्भर करता है और इस संबंध में निर्णय लेने की उनकी प्रक्रिया पर निश्चय ही उधार लेने वाले देश की आंतरिक नीतियों का प्रभाव पड़ता है। किंतु यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अन्य बातों के समान रहने पर यथार्थवादी पूर्वधारणा के अंतर्गत व्यापार का परिमाण जितना ही अधिक होगा, उतनी ही ज्यादा विदेशी पूँजी के आने की आशा की जा सकती है।

इसका कारण यह है कि, व्यापार की मात्रा अधिक होने से ब्याज और मूलधन के पुनर्भुगतान का अंतरण अधिक सरलता से किया जा सकता है, जो कि व्यापार का परिमाण कम होने पर संभव नहीं है और यदि ब्याज तथा मूल के पुनर्भुगतान की संभावना कम है, तो पूँजी के बड़े पैमाने पर प्रवाह की आशा करना अयथार्थवादी होगा। इससे भी अधिक संबंधित तथ्य यह है कि निर्यात उद्योगों के लिए विदेशी पूँजी प्राप्त करना अधिक सरल है क्योंकि उनमें अन्य प्रकार के निवेशों की तुलना में जो प्रत्यक्ष तौर पर स्वयमेव भुगतान संतुलन में सुधार नहीं करता है पुन: अंतरण की समस्या का समाधान अन्तर्निहित होता है। विदेशी पूँजी द्वारा निर्यात उद्योगों को यह अधिमानता दिया जाना खेद जनक है क्योंकि अन्य प्रकार के निवेश (जैसे सार्वजनिक प्रतिष्ठानों, रेल मार्गों, विनिर्माण उद्योगों में निवेश) बहुधा अधिक उत्पादक होते हैं और ये तीव्र औद्योगिकरण में ज़्यादा योगदान कर सकते हैं।

चौथा, व्यापार स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का पोषण करके तथा अकुशल एकाधिकार को नियंत्रण में रख कर तीव्र औद्योगिकरण को बढ़ावा देता है। अमरीकी अर्थव्यवस्था दूसरी कई अन्य अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अधिक प्रतिस्पर्धी और दक्ष है उसका कारण संभवतया यह है कि अमरीका में एकाधिकार विरोधी नीति की तुलना में अधिक आंतरिक व्यापार स्वतंत्रता है जो सदैव ही यूरोप या किसी भी अन्य जगह की तुलना में अमरीका में अधिक लोकप्रिय है।

विकासशील देशों के लिए भी बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा, विशेषकर उनके जैसे सामान्यतया छोटे आकार के बाज़ार में (यद्यपि कि भौगोलिक क्षेत्र विस्तृत होता है), महत्त्वपूर्ण है। फिर भी आरक्षण किया जाता है। औद्योगिकरण की शैशवावस्था में देश की विशालता और उद्योग के प्रकार के अनुसार एकाधिकार पूर्ण स्थितियों के सृजन को न्यायोचित ठहराया जा सकता है। किंतु यह समस्या हमेशा रहेगी कि एक उद्योग की जड़ें गहरी हो जाने तथा आयात संबंधी प्रतिबंधों की वैशाखी के बिना भी खड़ा हो सकने की स्थिति में आ जाने के बावजूद कैसे अकुशल तथा शोषक एकाधिकारी प्रवृत्तियों को जड़ जमाने से रोका जाए।

पाँचवाँ, विदेश व्यापार छोटे घरेलू बाज़ार की सीमाओं की समस्या को हल करता है।

संक्षेप में, विदेश व्यापार विकासशील देशों की उत्पादक क्षमताओं के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान करता है और उस सीमा तक तीव्र औद्योगिकरण में सहायक होता है।

2.4.2 विदेश व्यापार के विकास में उद्योग का योगदान

यह कहना मात्र पुनरावृत्ति करना होगा कि तीव्र औद्योगिकरण से विदेश व्यापार, निर्यात और आयात दोनों को बढ़ावा मिलता है। एक अर्थव्यवस्था में औद्योगिकरण की प्रक्रिया जैसे-जैसे बढ़ती है, व्यापार के माल का परिमाण भी बढ़ता जाता है। यह नहीं कि मात्र व्यापार के कुल आकार में वृद्धि होती जाती है अपितु इसका सापेक्षिक आकार इस अर्थ में भी बढ़ता जाता है कि सकल घरेलू उत्पाद में विदेश व्यापार के अनुपात का बढ़ना भी जारी रहता है।

इसी प्रकार, वैश्विक व्यापार में भी देश का हिस्सा बढ़ना जारी रहता है

सकल घरेलू उत्पाद में निर्यात/आयात का हिस्सा व्यापारिक कार्यकलाप के संबंध में अर्थव्यवस्था के बहिर्गामी-अभिविन्यास अथवा खुलेपन की अवस्था को दर्शाता है। यह हिस्सा मोटे तौर पर देश में अपनाई गई व्यापार रणनीति की प्रकृति को प्रतिबिम्बित करता है। सकल घरेलू उत्पाद में निर्यात का अनुपात निर्यात के संबंध में अर्थव्यवस्था की औसत आपूर्ति क्षमता की व्याख्या करने के लिए भी किया जा सकता है। इसे औसत निर्यात प्रवृत्ति भी कहा जा सकता है। आयात और सकल घरेलू उत्पाद के बीच इसी प्रकार के अनुपात से आयात की औसत प्रवृत्ति का पता चलता है।

तथापि, छोटी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में बड़ी अर्थव्यवस्था में संसाधनों के कुशल आवंटन के

अंतर्गत उत्पादन में निर्यात का उपयुक्त हिस्सा स्पष्ट तौर पर कम होगा। विश्व व्यापार में निर्यात का हिस्सा विश्व अर्थव्यवस्था में राष्ट्र के रूप में देश के महत्त्व को दर्शाता है।

आगे, निर्यात के मूल्य में परिवर्तनों की तुलना आयात के मूल्य में परिवर्तनों से की जा सकती है। इन दोनों चरों (प्रभावित करने वाली वस्तुओं) के बीच संबंध को आयात-निर्यात मूल्य-स्थिति के रूप में जाना जाता है; अर्थात् मूल्य जिस पर निर्यात का विनिमय आयात के लिए होता है; यदि निर्यात मूल्य आयात मूल्य की तुलना में वृद्धि दर्शाता है तो आयात-निर्यात मूल्य-स्थिति को अनुकूल कहा जाता है। अनुकूल आयात-निर्यात मूल्य-स्थिति का यह अर्थ है कि एक देश निर्यात मूल्य की अपेक्षा अधिक मूल्य में आयात कर सकता है। इसके विपरीत यदि आयात-निर्यात मूल्य-स्थिति प्रतिकूल है तो एक देश को अपने आयात की मात्रा के लिए कहीं अधिक मात्रा में निर्यात करना होगा।

व्यापार के मूल्य से भी अधिक महत्त्वपूर्ण व्यापार का संघटन है। व्यापार के संघटन से एक अर्थव्यवस्था की संरचना और विकास के स्तर का पता चलता है। उदाहरण के लिए, अधिकांश विकासशील देश अपने निर्यात आय के लिए कुछ प्राथमिक वस्तुओं पर निर्भर करते हैं, ये देश कृषि क्षेत्र के कच्चे मालों का निर्यात और विनिर्मित औद्योगिक उत्पादों का आयात करते हैं, इस प्रकार वे मूल्य-संवर्द्धन के लाभ से वंचित रह जाते हैं। एक अर्थव्यवस्था में औद्योगिकरण जैसे-जैसे बढ़ता है, इसका व्यापार भी विविधतापूर्ण होता चला जाता है और यह कुछ ही देशों पर निर्भर नहीं रह जाता है। इस संबंध में, यह पूछा जा सकता है कि क्या निर्यात के लिए बाज़ार और आयात के लिए आपूर्ति के स्रोतों का केन्द्रीकरण हुआ है अथवा विकेन्द्रीकरण।

विदेश व्यापार की सम्पूर्ण संरचना–मूल्य, संघटन और दिशा–बहुत हद तक सरकार द्वारा अपनाई गई व्यापार नीति से निर्धारित होती है।

व्यापार नीति से अभिप्राय उन सभी नीतियों से है जिसका किसी देश के व्यापार व्यवहार पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव पड़ता है। विभिन्न नीतियों का ब्यौरा देश में अपनाई गई व्यापक व्यापार रणनीति पर निर्भर करता है; और व्यापार रणनीति नियोजकों द्वारा अपनाई गई व्यापक विकास रणनीति पर निर्भर करता है।

मोटे तौर पर दो प्रमुख व्यापार नीतियों की पहचान निम्नवत् की जा सकती है :

- अन्तर्मुखी (Inward-oriented) व्यापार नीति; और
- बहिर्मुखी (Outward-oriented) व्यापार नीति।

एक व्यापक ढाँचे में, अन्तर्मुखी व्यापार नीति का अभिप्राय उन सभी नीतियों से है जो विदेशी संसाधनों पर निर्भरता को हतोत्साहित करती है। इस रणनीति के अंतर्गत, इसके अतिवादी स्वरूप में किसी भी विदेशी सहायता की अनुमति नहीं होती है, उत्पादन के कारकों को देश के अंदर लाने अथवा देश से ले जाने की अनुमति नहीं होती है, किसी भी बहुराष्ट्रीय निगम के लिए कोई स्थान नहीं होता है और अन्तरराष्ट्रीय संचार की स्वतंत्रता नहीं होती है।

प्राथमिक वस्तुओं के निर्यात की तुलना में, विनिर्मित वस्तुओं के निर्यात से अधिक मूल्यसंवर्द्धन लाभ प्राप्त होता है क्योंकि वह प्रसंस्करण के कई चरणों से होकर गुजरता है। विनिर्मित क्षेत्र का शेष अर्थव्यवस्था से अधिक सहलग्नता होता है और इसलिए प्राथमिक वस्तुओं के निर्यात की अपेक्षा इन क्षेत्रों से निर्यात का शेष क्षेत्रों पर अधिक अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

जिन वस्तुओं का व्यापार किया जाता है उन्हें अन्य विभिन्न मापदंडों के द्वारा भी वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे उत्पादन की प्रति इकाई में किया गया मूल्यसंवर्द्धन, श्रम की उत्पादकता,

उत्पादन में पूँजी प्रधानता, पश्चानुबंध और अग्रानुबंध की शक्ति इत्यादि। इन वर्गों में व्यापार के वस्तु संघटन में परिवर्तन के परिणामस्वरूप आय के सृजन, रोजगार प्रभाव और सहलग्नता प्रभाव के माध्यम से समग्र औद्योगिकरण इत्यादि के संबंध में संरचनात्मक परिवर्तन होता है।

औद्योगिकरण का परिमाण व्यापार की दिशा को भी प्रभावित करता है। औद्योगिकरण की प्रक्रिया जैसे-जैसे आगे बढ़ती है और व्यापार का विविधिकरण होता है, एक देश को अपने निर्यात के लिए नया बाज़ार खोजना पड़ता है। आयात के मामले में भी चयन का अवसर बढ़ जाता है। देश का सतत् वृद्धिशील वर्तमान विश्व अर्थव्यवस्था के साथ व्यापार शुरू हो जाता है।

इस अतिशय अन्तर्मुखी ढाँचा के ठीक विपरीत बहिर्गामी ढाँचा है जिसमें पूँजी, श्रम, माल, बहुराष्ट्रीय उपक्रमों के आने-जाने की छूट होती है और संचार की आज़ादी रहती है। विनिर्मित औद्योगिक मालों का निर्यात और औद्योगिक कच्चे मालों, पूँजीगत उपस्करों तथा तकनीकी जानकारी का आयात बढ़ जाता है। देश में अतिशय अन्तर्मुखी अभिविन्यास का अस्तित्व नहीं के बराबर रह जाता है।

अलग-अलग देशें में अलग-अलग समय और काल में अलग-अलग मात्रा में अन्तर्मुखी तथा बहिर्गामी अभिविन्यास देखा गया है।

बहिर्गामी अभिविन्यास के पक्ष में तर्क

बहिर्गामी अभिविन्यास के पक्षधर तर्क देते हैं कि खुलापन अच्छे शैक्षणिक प्रभावों, नए विचारों और नई तकनीकों को लाने, संगठन के नए रूपों के विकास इत्यादि में उपयोगी होता है। उनका विश्वास है कि मुक्त-व्यापार से व्यापार के माध्यम से सीखने को प्रोत्साहन मिलता है तथा अर्थव्यवस्था के गतिमान परिवर्तन से उच्चतर जीवन स्तर की प्राप्ति होती है। मुक्त-व्यापार में सबकी जीत है, सभी व्यापारिक साझीदारों को उनकी घरेलू संस्थाओं और नीतियों में विविधता होने पर भी उत्पादकता में सुधार से लाभ ही लाभ होता है।

अन्तर्मुखी अभिविन्यास के पक्ष में तर्क

अन्तर्मुखी अभिविन्यास के पक्षधर इन तर्कों के विरुद्ध यह दलील देते हैं कि अन्तर्मुखी अभिविन्यास नीतियों से घरेलू प्रतिभा को प्रोत्साहन मिलता है, स्वयं ही कोई काम करना सीखता है, घरेलू प्रौद्योगिकीय विकास और उत्पादों की धारणीय श्रृंखला को प्रोत्साहन मिलता है तथा बाहरी विश्व के प्रदर्शन के बुरे प्रभावों से बचा जा सकता है। विकासशील और विकसित देशों के बीच विकास के अंतराल के मद्देनजर भी अनिवार्य नीति के रूप में अन्तर्मुखी अभिविन्यास के पक्ष में दलील दी जाती है।

उत्पादन में वृद्धि, रोजगार, आय के सृजन और आय संबंधी असमानता के संबंध में इन दो प्रकार की रणनीतियों के प्रभाव भी अलग-अलग तरह के हो सकते हैं और इस संदर्भ में कोई सामान्य निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है।

बोध प्रश्न 2

1) उद्योग कृषि क्षेत्र के विकास में किस प्रकार से योगदान कर सकता है, किन्हीं पाँच तरीकों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) विदेश व्यापार किस तरह से एक अर्थव्यवस्था के तीव्र औद्योगिकरण में सहायक होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) किस प्रकार तीव्र औद्योगिकरण एक देश के विदेश व्यापार की संरचना को प्रभावित करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) एक विकासशील अर्थव्यवस्था में तीव्र औद्योगिकरण की प्रक्रिया में कृषि किस प्रकार योगदान करता है? किन्हीं चार का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 औद्योगिकरण, घरेलू व्यापार और परिवहन

पिछले भाग में हमने औद्योगिकरण और विदेश व्यापार के बीच सहलग्नताओं की प्रकृति का परीक्षण किया। औद्योगिकरण का घरेलू व्यापार और परिवहन के साथ भी समान रूप से सुदृढ़ सहलग्नता है।

2.5.1 औद्योगिकरण और घरेलू व्यापार

किसी अर्थव्यवस्था के औद्योगिकरण का घरेलू व्यापार की स्थिति पर तत्काल प्रभाव पड़ता है। विनिर्मित वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि से व्यापारिक माल के कारोबार में वृद्धि होती है। इन बढ़े हुए कारोबार का क्रमिक प्रभाव घरेलू व्यापार के विभिन्न क्षेत्रों तक होता है।

इसी प्रकार, यदि घरेलू व्यापार को तीव्रगति से औद्योगिकरण करने वाली अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने के लिए सक्षम नहीं बनाया जाता है तो यह कमी एक गंभीर बाधा बन सकती है।

अपर्याप्त व्यापार प्रबन्धों के परिणामस्वरूप उत्पादकों के पास बड़े पैमाने पर माल का संचय हो

सकता है। यह उत्पादकों को उत्पादन कम करने तथा और निवेश नहीं करने क़े लिए बाध्य कर सकता है।

इसी प्रकार, ग़ैर जिम्मेदाराना व्यापार निविष्ट वस्तुओं (आदानों) की आपूर्ति लाइन को भी बाधित कर सकता है। कच्चे मालों और अर्ध निर्मित वस्तुओं के सुगम प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

दोनों ही अवस्थाओं में औद्योगिक उत्पादन प्रभावित होगा तथा दीर्घकाल में यह औद्योगिक निवेश को बुरी तरह से प्रभावित कर सकता है।

2.5.2 औद्योगिकरण और परिवहन

यहाँ, पुन: दोनों के बीच सहलग्नता स्पष्ट है। अच्छी परिवहन प्रणाली से तीव्र औद्योगिकरण को गति मिलता है और तीव्र औद्योगिकरण से अच्छी परिवहन प्रणाली को बढ़ावा मिलता है।

एक अच्छी और तत्पर परिवहन प्रणाली कई प्रकार से तीव्र औद्योगिकरण को सुगम बनाती है।

सबसे पहले, परिवहन उत्पादन का एक हिस्सा है; परिवहन प्रणाली में सुधार से उत्पादक मालों की लागत में कमी आती है और परिणामस्वरूप उनके मूल्य में कमी होती है। सस्ते परिवहन का उत्पादन के लागत पर प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों ही प्रभाव पड़ते हैं।

परिवहन की दरों में कमी का सीधा प्रभाव यह होता है कि संयोजक (असेम्बलिंग) कच्चे मालों और तैयार उत्पादों के नौवहन के लिए खर्च में कमी करके अथवा व्यावसायिक यात्रा के ख़र्च को कम करने से कुल उत्पादन लागत में कमी आती है।

परोक्ष रूप से सस्ता परिवहन श्रम विभाजन और बड़े पैमाने पर उत्पादन के माध्यम से कुशल निष्कासन और विनिर्माण को अधिक संभव बना कर उत्पादन लागत को कम करता है।

दूसरा, परिवहन से श्रम विभाजन संभव हो जाता है क्योंकि इससे सुदूरवर्ती स्थानों से उत्पादों को लाना संभव हो जाता है और इस प्रकार समझ में आने वाली जरूरत की सभी वस्तुओं का स्थानीय स्तर पर उत्पादन करने की आवश्यकता से बचा जा सकता है। इस प्रकार प्रत्येक आर्थिक क्षेत्र उन वस्तुओं अथवा सेवाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकता है जो या तो प्रदत्त प्राकृतिक संसाधनों अथवा ऐतिहासिक विकास के परिणामस्वरूप उनके सबसे अनुकूल हो। इस प्रकार, इससे उपलब्ध संसाधनों का बेहतर आर्थिक उपयोग संभव होता है।

तीसरा, परिवहन से बाज़ार के आकार के विस्तार में सहायता मिलती है। कोई भी आधुनिक बड़ा उत्पादक केवल स्थानीय बाज़ार पर ही निर्भर रहकर काम नहीं कर सकता है। स्पष्ट है, बड़े पैमाने पर उत्पादन तभी संभव है जब बाज़ार का विस्तार देशव्यापी अथवा कुछ मामलों में विश्व व्यापी हो।

चौथा, परिवहन सम्पदा के उपयोग से भी संबंधित है। इससे उपभोक्ता वस्तुओं की गुणवत्ता और विविधता बढ़ती है और इसके परिणामस्वरूप भी आवश्यकताएँ और बढ़ती हैं। सस्ते परिवहन के कारण उत्पादन लागत में कमी आती है और उत्पादन बढ़ता है। अधिक विविधतापूर्ण वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं क्योंकि परिवहन से ये वस्तुएँ उन समुदायों तक भी पहुँचती हैं जो उत्पादन स्थल के समीप नहीं रहते हैं।

संक्षेप में, परिवहन तीव्र औद्योगिकरण का एक महत्त्वपूर्ण तत्व है; और परिवहन की पर्याप्त व्यवस्था के बिना औद्योगिकरण की कल्पना नहीं की जा सकती है।

वहीं, तीव्र औद्योगिकरण से परिवहन प्रणाली के विकास में भी सहायता मिलती है। तीव्र औद्योगिकरण कई प्रकार से परिवहन प्रणाली को प्रभावित करता है।

सर्वप्रथम, तीव्र औद्योगिकरण की प्रक्रिया में कच्चे माल, अर्धनिर्मित मालों, निर्मित उत्पादों और श्रम शक्ति का बड़े पैमाने पर परिवहन अन्तर्निहित है। ये परिवहन क्षेत्र के लिए माँग पैदा करते हैं। परिवहन क्षेत्र में अधिक निवेश और इसके विस्तार की संभावना बढ़ जाती है और यह क्षेत्र लाभप्रद बन जाता है।

दूसरे, औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप द्रुत और अधिक सक्षम तथा तत्पर परिवहन के साधनों का विकास होता है। औद्योगिक क्षेत्र में तकनीकी खोजों से सभी प्रकार के परिवहन साधनों यथा सड़क, रेलमार्ग, हवाई मार्ग, नौवहन इत्यादि को लाभ पहुँचता है। इससे परिवहन की गति बढ़ती है और परिणामस्वरूप प्रति इकाई लागत घटती है। लागत में गिरावट के एक अंश का लाभ अंतिम उपयोगकर्ता तक पहुँचता है जिससे माँग बढ़ती है और इसके साथ ही परिवहन के लिए भी माँग की वृद्धि होती है।

संक्षेप में, तीव्र औद्योगिकरण का परिवहन के साथ पश्चानुबंध और अग्रानुबंध दोनों सहलग्नता हैं। दोनों एक-दूसरे के लिए पूरक की भाँति कार्य करते हैं।

2.6 औद्योगिकरण और आधारभूत संरचना

यह स्वयं सिद्ध है कि तीव्र औद्योगिकरण के लिए पर्याप्त आधारभूत संरचना की आवश्यकता होती है। वहीं यह भी सामान्यतया स्वीकार किया जाता है कि एक देश विशेष में विकास के दिए गए स्तर पर निर्दिष्ट मात्रा में परिवहन क्षमता विद्यमान होती है।

तथापि, इन क्षमताओं के निर्धारण और निवेश के निहित दर पर सर्वसम्मति नहीं है।

औद्योगिक विकास में आधारभूत संरचना की भूमिका पर समकालीन मत मुख्य रूप से विचार के दो अलग-अलग सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

क) पहले सम्प्रदाय का मानना है कि आधारभूत संरचना का विकास अन्य आर्थिक कार्यकलापों के विकास से पहले होना चाहिए। इसलिए आधारभूत संरचना में निवेश क्षमता में कमी पर नहीं अपितु भावी माँग के पूर्वानुमान पर आधारित होना चाहिए। इस तर्क के पीछे यह युक्ति है कि जैसे ही एक बार आधारभूत संरचना क्षमताओं का सृजन हो जाता है, उससे कई प्रकार की बाह्य मितव्ययिता का सृजन होता है, जिससे अन्य आर्थिक कार्यकलापों में उपयोग किए जाने वाले आदानों के लागत में कमी आ जाती है। इससे उपयोग में नहीं लाए गए और आंशिक तौर पर उपयोग में लाए गए संसाधनों के दोहन के लिए जबर्दस्त प्रेरणा मिलती है जो अन्यथा आधारभूत संरचना सुविधाओं की कमी के कारण बेकार पड़े रहते।

आधारभूत संरचना क्षमताओं का भावी माँगों के पूर्वानुमान पर सृजन दो सुदृढ़ युक्तियुक्त कारणों पर आधारित है :

i) आधारभूत संरचना अविक्रेय वस्तु है अर्थात् इसकी सेवाओं का आयात नहीं किया जा सकता है।

ii) आधारभूत संरचना में निवेश एकमुश्त और अधिक मात्रा में होता है। इसलिए, आधारभूत संरचना में व्यावसायिक लाभ के आधार पर निवेश करने का औचित्य नहीं होने पर भी इसके लिए निधियां आवंटित करना आवश्यक है। निवेश की भारी राशि से भी यह अनिवार्य

हो जाता है कि यदि हम आधारभूत संरचना से सम्बद्ध बड़े पैमाने की मितव्ययिता का लाभ उठाना चाहते हैं तो तात्कालिक माँग की अपेक्षा कहीं अधिक बड़े क्षमता का सृजन करना होगा।

ख) दूसरे सम्प्रदाय के लोगों का विचार इसके ठीक विपरीत है तथा उनका तर्क है कि आधारभूत संरचना सुविधाओं का निर्माण जहाँ अवरोध हो वहाँ और क्षमता की कमी की स्थिति में किया जाना चाहिए न कि उस माँग की प्रत्याशा में जो भविष्य में कभी उत्पन्न ही नहीं होगा। इस विचार का औचित्य दो तरह से है : दीर्घकालीन निवेश में अन्तर्निहित जोखिम एवं अनिश्चितता तथा यह धारणा कि आधारभूत संरचना के विकास के लिए सामान्यतया जिस बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता होती है उसके लिए योजना बनाना सरल नहीं है।

किसी देश में एक निश्चित समय में नीति निर्माताओं द्वारा उपर्युक्त दो विकल्पों में से चाहे जिस भी विकल्प का चयन किया जाए औद्योगिकरण और आधारभूत संरचना एक-दूसरे के पूरक हैं यह बिल्कुल साफ है। दोनों एक-दूसरे को बढ़ावा देते हैं।

2.7 औद्योगिकरण की अन्य सहलग्नताएँ

औद्योगिक क्षेत्र का अनेक व्यापक और अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण सहलग्नता प्रभाव होता है जिनका किसी देश के आर्थिक विकास पर गत्यात्मक (dynamic) प्रभाव पड़ता है। इसे एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है।

एक पिछड़ी हुई कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में यदि किसान उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाना चाहता है तो उसका शिक्षित होना महत्त्वपूर्ण है। इसी प्रकार, शहरी लोगों की शिक्षा और जन साक्षरता को बढ़ावा देने का कार्यक्रम भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। आवासों में प्रकाश की व्यवस्था और पम्पसेटों को ऊर्जीकृत करने के लिए ग्रामीण विद्युतीकरण आवश्यक है। औद्योगिक क्षेत्र से इन दोनों में सहायता मिल सकती है। विद्युत उत्पादन सरकार को श्रव्य-दृश्य (आडियो-विजुअल) तकनीकों का उपयोग करने में सहायता कर सकती है जो किसानों तथा शहरी क्षेत्रों में निरक्षरों को शिक्षा देने में सहायक हो सकता है। इस कार्यक्रम में औद्योगिक आदानों की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए, विद्युत उत्पादन संयंत्र जिस पर भारी निवेश की जरूरत होती है, का शुरू में आयात किया जा सकता है। किंतु बिजली के स्विचों तथा फिटिंगों, तार और केबुल, बल्बों इत्यादि का विनिर्माण स्थानीय स्तर पर ही किया जा सकता है। इलैक्ट्रॉनिक उद्योग की स्थापना से उस सीमा तक जन शिक्षा कार्यक्रम में सहायता मिल सकती है जहाँ तक कि इस उद्देश्य के लिए विभिन्न मीडिया का उपयोग किया जा सके।

उद्योग न सिर्फ आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आरम्भ के लिए अपेक्षित आदानों का ही उत्पादन करता है अपितु उद्यमियों, वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, तकनीशियनों, लेखाकारों, अर्थशास्त्रियों इत्यादि जैसे तकनीकी रूप से दक्ष व्यक्तियों की सेना खड़ी करने में भी मदद करता है जो आर्थिक विकास के लिए इन आदानों का सक्रिय उपयोग करते हैं।

इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि आर्थिक विकास को उत्प्रेरित करने वाले कारकों पर औद्योगिकरण का व्यापक सहलग्नता प्रभाव है।

बोध प्रश्न 3

1) औद्योगिकरण और घरेलू व्यापार के बीच संबंध की जाँच कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उद्योग और अर्थव्यवस्था के परिवहन क्षेत्र के बीच सहलग्नता की प्रकृति की जाँच करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) आधारभूत संरचना में निवेश औद्योगिक विकास से पहले होना चाहिए या बाद में?

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 सारांश

सामान्यतया आर्थिक विकास का अभिप्राय औद्योगिकरण ही है। तथापि, औद्योगिक क्षेत्र में विकास कार्यक्रमों को पृथक् रूप से नहीं देखा जा सकता। अर्थव्यवस्था के सभी अन्य क्षेत्रों अर्थात् कृषि, व्यापार, परिवहन, आधारभूत संरचना इत्यादि के साथ उद्योग की निकट सहलग्नता है। उद्योग और इन क्षेत्रों में से प्रत्येक के बीच इस प्रकार की सहलग्नता है कि उनमें से सभी एक दूसरे के पूरक हैं। अर्थव्यवस्था में एक क्षेत्र के विकास को अन्य क्षेत्रों के विकास से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। इसलिए, किसी भी सतत् आर्थिक विकास कार्यक्रम में अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के संतुलित विकास की योजना तैयार करना महत्त्वपूर्ण है।

2.9 शब्दावली

संरचनात्मक परिवर्तन : एक अर्थव्यवस्था में विभिन्न क्षेत्रों के सापेक्षिक महत्त्व में परिवर्तन।

आधारभूत संरचना : उत्पादन क्षेत्र के लिए अपेक्षित सहायक सेवाओं की संरचना।

अधिशेष : कुल उत्पादन और कुल उपभोग के स्तर में अंतर।

श्रम का सीमान्त उत्पादन : श्रम की एक अतिरिक्त इकाई के नियोजन से कुल उत्पादन में हुई वृद्धि।

जीवन-निर्वाह मजदूरी : जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक मजदूरी का न्यूनतम दर।

पश्चानुबंध : उद्योग और इसके आदानों की आपूर्तिकर्ताओं के बीच संबंध।

अग्रानुबंध : एक उद्योग और अन्य उद्योगों जो इसके उत्पादन का आदान के रूप में उपयोग करते हैं; के बीच संबंध।

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें एवं संदर्भ

दीपक नैय्यर; (1997). *ट्रेड एण्ड इण्डस्ट्रियलाइजेशन*, ऑक्सफोर्ड, नई दिल्ली.

श्रीनिवास वाई ठाकुर; (1985). *इण्डस्ट्रियलाइजेशन एण्ड इकोनॉमिक डेवलपमेंट*, पॉपुलर बॉम्बे, अध्याय 9, 6

जेराल्ड एम मायर; (2000). *लीडिंग इश्यूज इन इकनॉमिक डेवलपमेंट*, ऑक्सफोर्ड, नई दिल्ली.

डोनाल्ड ए. हे एण्ड डेरेक जे मॉरिस; (1984). *इण्डस्ट्रियल इकोनॉमिक्स, थ्योरी एण्ड एविडेन्स*, ऑक्सफोर्ड, लंदन, अध्याय 1

आई.सी. धींगरा; (2001). *दि इंडियन इकोनॉमी, एनवायरन्मेंट एण्ड पॉलिसी*, सुल्तान, नई दिल्ली.

2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 2.2 देखें।

2) भाग 2.2 देखें।

3) उपभाग 2.2.1 देखें।

4) उपभाग 2.3.1 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 2.3.2 देखें।

2) उपभाग 2.4.1 देखें।

3) उपभाग 2.4.2 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 2.5.1 देखें।

2) उपभाग 2.5.2 देखें।

3) उपभाग 2.6 देखें।